हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन

प्रो0 रश्मि कुमार
हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सार:हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन शुष्क एवं नीरस विषयों को भी सरस ढंग से प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। वे छायावादोत्तर युग के प्रख्यात कवि हैं। हरिवंशराय बच्चन जैसे महान और उच्च कोटी की विचारधारा वाले कवि सदियों में जन्म लेते हैं । बच्चन जी उत्तर छायावादी काल के आस्थावादी कवि हैं। आपकी कविताओं में भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। आपकी कविता में प्रेम के संयोग–वियोग जन्य भावपूर्ण चित्र अंकित हैं। प्रेम के अतिरिक्त जीवन के अन्य सन्दर्भो में निराशा की भाषा देखने को मिलती है। विद्रोह का स्वर भी कहीं–कहीं आपकी कविताओं में मिलता है। आपकी पूर्ववर्ती रचनाओं में वैयक्तिकता है तो परवर्ती रचनाओं में जन–जीवन का व्यापक चित्रण है। वैचारिक क्रान्ति, मानवीय संवेदना और व्यंग्य–दंश से पूर्ण आपके काव्य ने हिन्दी कविता को नयी दिशा प्रदान की है। बच्चन जी की भाषा साहित्यिक होते हुए भी बोलचाल की भाषा के अधिक निकट है। आपकी भाषा सरल व सरस है। आपने लोकगीतों और मुक्तक छन्दों की रचना की है। अपनी गेयता, सरलता, सरसता और खुलेपन के कारण आपके गीत बहुत ही पसन्द किये जाते है। हरिवंश राय बच्चन छायोत्तरवाद युग के प्रमुख कवियों में से एक कवि है, जिन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षो को ध्यान में रखकर रचनाएँ की है, जिनकी पुष्टि मधुशाला, मधुकलश, सतरंगिनी जैसी रचनाओं से होती है।

शब्द संकेत : हरिवंशराय, आस्थावादी, कवि, छायावादी, साहित्यिक, रचनाएँ ।

विषय प्रवेश:

श्री हरिवंश राय बच्चन 'हालावाद' के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म 27 नवंबर 1907 को उत्तर प्रदेश के प्रयाग (इलाहाबाद) में एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था।इनकी प्रारंभिक शिक्षा म्यूनिसिपल स्कूल, कायस्थ पाठशाला तथा गवर्नमेंट स्कूल में हुई थी। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. (अंग्रेजी) में दाखिला लिया लेकिन असहयोगआंदोलन से प्रेरित होकर पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी। आपने सन 1939 में काशी विश्वविद्यालय से बी.टी.सी. की डिग्री प्राप्त की। एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद आप 1942 से 1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। इसके बाद यह इंग्लैंड चले गए। वहां उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। सन 1955 ईस्वी में भारत सरकार ने इन्हें विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के पद पर नियुक्त किया। जीवन के अंतिम क्षणों तक वे स्वतंत्र लेखन करते रहे। इन्हें सोवियत लैंड तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'दसद्वार से सोपान तक' रचना पर इन्हें सरस्वती सम्मान' दिया गया। इनकी प्रतिभा और साहित्य सेवा को देखकर भारत सरकार ने इनको 'पदमभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया था। 18 जनवरी सन 2003 में वे इस संसार को छोड़कर चिरनिद्रा में लीन हो गए।उनको लिखने का शौक बचपन से ही था। उन्होंने फारसी कवि उम्र शाम की कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया था। इसी बात से प्रोत्साहित होकर उन्होंने कई क्रुतियाँ लिखि जिनमें मधुशाला, मधुबाला, मधु कलश आदि शामिल है। उनके इस सरलता वाले काव्य को बहुत पसंद किया जाने लगा। मधुशाला ने हरिवंश राय बच्चन को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि दिलाई। हरिवंश राय बच्चन को उमर खय्याम की ही तरह शेक्सपियर, मैकबेथ और आथेलो और भगवत गीता के हिंदू के अनुवाद के लिए हमेशा याद किया जाता है। इन्होंने नवंबर 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या पर आधारित अपने अंतिम कृति लिखी थी।

हरिवंश राय बच्चन की कृतियां:

इस महान कवि ने गीतों के लिए आत्मकथा, निराशा और वेदना को अपने काव्य का विषय बनाया है। उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य कृतियों में से निशा निमंत्रण, मिलन यामिनी, धार के इधर–उधर, मधुशाला प्रमुख है।हरिवंश राय बच्चन की गद्य रचनाओं में क्या भूलूं क्या याद करू, टूटी छूटी कड़ियां, नीड़ का निर्माण फिर–फिर आदि श्रेष्ठ है।मधुबाला, मधुकलश, सतरंगीनी , एकांत संगीत , निशा निमंत्रण, विकल विश्व, खादी के फूल , सूत की माला, मिलन दो चट्टानें भारती और अंगारे इत्यादि हरिवंश राय बच्चन की मुख्य क्रुतियाँ है।1968 में अपनी रचना "दो चट्टानें" कविता के लिए भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। कुछ समय बाद उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और एफ्रो एसियन सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उनकी सफल जीवन कथा, क्या भूलूं क्या याद रखु , नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर और दशद्वार से सोपान के लिए बिरला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।उन्होंने लोक धुनों पर आधारित भी कई गीत लिखे हैं, संवेदना शीलता उनकी कविता का एक विशेष गुण है। विषय और शैली की दृष्टि की स्वाभाविकता बच्चन की कविताओं का उल्लेखनीय गुण हैं। उनकी भाषा बोल चाल की भाषा होते हुए भी प्रभावशाली है। बच्चन अपने बड़े बेटे अमिताभ बच्चन के फिल्मी जगत में जाने पर ज्यादा खुश नहीं थे, उनकी इच्छा थी कि अमिताभ बच्चन नौकरी करें।बच्चन व्यक्तिवादी गीत, कविता के अग्रणी कवि हैं। हरिवंशराय बच्चन हालावादी कवि हैं । हालावाद के साथ रहस्यवादी भावना का अनूठा एवं अद्भुत संगम उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। उनकी कविताओं में प्रेम और सौन्दर्य सामाजिक चेतना के भाव मुखरित हैं ।

कलापक्ष : हरिवंश राय बच्चन की कविताओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। तत्सम शब्दावली का प्रयोग इनके काव्य में हुआ है। मुख्य रूप से प्रांजल शैली एवं गीति शैली के दर्शन इनके काव्य में होते हैं । इनके काव्य में उपमा, रूपक, यमक, अनुप्रास, श्लेष आदि अनेक अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

साहित्य में स्थान: हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन शुष्क एवं नीरस विषयों को भी सरस ढंग से प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। वे छायावादोत्तर युग के प्रख्यात कवि हैं। हरिवंशराय बच्चन जैसे महान और उच्च कोटी की विचारधारा वाले कवि सदियों में जन्म लेते हैं । बच्चन जी उत्तर छायावादी काल के आस्थावादी कवि हैं। आपकी कविताओं में भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। आपकी कविता में प्रेम के संयोग–वियोग जन्य भावपूर्ण चित्र अंकित हैं। प्रेम के अतिरिक्त जीवन के अन्य सन्दर्भो में निराशा की भाषा देखने को मिलती है। विद्रोह का स्वर भी कहीं–कहीं आपकी कविताओं में मिलता है। आपकी पूर्ववर्ती रचनाओं में वैयक्तिकता है तो परवर्ती रचनाओं में जन–जीवन का व्यापक चित्रण है। वैचारिक क्रान्ति, मानवीय संवेदना और व्यंग्य–दंश से पूर्ण आपके काव्य ने हिन्दी कविता को नयी दिशा प्रदान की है। बच्चन जी की भाषा साहित्यिक होते हुए भी बोलचाल की भाषा के अधिक निकट है। आपकी भाषा सरल व सरस है। आपने लोकगीतों और मुक्तक छन्दों की रचना की है। अपनी गेयता, सरलता, सरसता और खुलेपन के कारण आपके गीत बहुत ही पसन्द किये जाते है। हरिवंश राय बच्चन छायोत्तरवाद युग के प्रमुख कवियों में से एक कवि है, जिन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षो को ध्यान में रखकर रचनाएँ की है, जिनकी पुष्टि मधुशाला, मधुकलश, सतरंगिनी जैसी रचनाओं से होती है। हरिवंश राय बच्चन की वें रचनाएँ जो उल्लास और वेदना से भरी है, ह्रदय को स्पर्श कर जाती है,ऐसी रचनाएँ हिंदी साहित्य में बहुत सराहनीय

योगदान देती है। आपने हिंदी साहित्य को सरलतापूर्वक भाषा में जन – जन तक पहुँचाने का कार्य किया है, जबकि हिंदी गीतों को नवीन दिशा प्रदान भी आपके द्वारा हुई है। सरलता संगीतमक्ता आपके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ है।

हरिवंश राय बच्चन की रचनाएँ :

हरिवंश राय बच्चन ने अपने जीवन में कई प्रकार की रचनाएँ हिंदी साहित्य को प्रदान की हैं, जिनमें सबसे पहले उनकी रचना तेरा हार है, जो 1932 में प्रकाशित हुई थी। इसके अलावा उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैः–

1. मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश :– हरिवंश राय बच्चन की यह रचनाएँ सबसे प्रमुख रचनाएं हैं, जो एक के बाद एक लगातार प्रकाशित होती रही हैं। इस प्रकार की रचनाओं में प्यार सनक की झलक देखने को मिलती है। बताया जाता है, उनकी यह रचनाएँ गम को भुलाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
2. निशा निमंत्रण तथा एकांत संगीत :– हरिवंश राय बच्चन की जीवन की प्रमुख रचनाओं में निशा निमंत्रण और एकांत संगीत का भी प्रमुख स्थान है, रचनाओं में हृदय की कवि की पीड़ा की झांकी साफ साफ नजर आती है।
3. सतरंगिनी और मिलयामिनी :– हरिवंश राय बच्चन की जीवन की यह रचनाएँ उत्साह से भरी है, जबकि इनमें श्रृंगार रस का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

इन रचनाओं के आलावा हरिवंश राय बच्चन ने प्रणय पत्रिका, आकुल अंतर, बुद्ध का नाचघर, आरती अँगारे जैसी विभिन्न रचनाएँ कई गीत, आत्मकथाएँ तथा कविताएँ प्रदान की हैं।उन्होंने अनेक विधाओं पर सफल लेखनी चलाई। इनकी प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं–

काव्य संग्रहः मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल–अंतर, मिलन यामिनी, आरती और अंगारे, नए पुराने, झरोखे, टूटी–फूटी कड़ियां, बुध और नाच घर।

आत्मकथाः (चार खंड)– क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दसद्वार से सोपान तक।

अनुवादः हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ।

डायरी – प्रवास की डायरी।

साहित्यिक विशेषताएंः श्री हरिवंश राय बच्चन जी एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे, जिन्होंने हालावाद का प्रवर्तन कर साहित्य को एक नया मोड़ दिया। इनका एक कहानीकार के रूप में उदय हुआ था। लेकिन बाद में वे अपने बुद्धि कौशल के आधार पर उन्होंने अनेक विधाओं पर लिखा। इनके साहित्य की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

प्रेम और सौंदर्यः श्री हरिवंश राय बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। जिसमें प्रेम और सौंदर्य का अनूठा संगम है। उन्होंने साहित्य में प्रेम और मस्ती भरकर प्रेम और सौंदर्य को जीवन का अभिन्न अंग मानकर उसका चित्रण किया है। वह कहते हैं कि–

इस पार प्रिए मधु है तुम हो
उस पार न जाने क्या होगा

बच्चन जी ने अपने काव्य में ही नहीं अपितु गध साहित्य में भी प्रेम और सौंदर्य का सुंदर अभिव्यक्ति की है। वह तो इस संवेदनहीन और स्वार्थी दुनिया को भी प्रेम रस में डुबो देना चाहते हैं। वह प्रेम का ऐसा संदेश देते हुए कहते हैं–

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूं
मैं मादकता निषेश लिए फिरता हूं
जिसको सुनकर जग झूमें, झुके, लहराए
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूं

मानवतावादः मानवतावाद एक ऐसी विराट भावना है जिसमें संपूर्ण जगत के प्राणियों का हित चिंतन किया जाता है। बच्चन जी ने अपने प्रेम और मस्ती में डूबे कवि नहीं थे बल्कि उनके साहित्य में ऐसी विराट भावना के भी दर्शन होते हैं। उनके साहित्य में मानव के प्रति प्रेम भावना अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने निरंतर स्वार्थी मनुष्यों पर कटु व्यंग किए हैं।

व्यक्तिवादः श्री हरिवंश राय बच्चन जी के साहित्य में व्यक्तिगत भावना सर्वत्र झलकती है। उनकी इस व्यक्तिगत भावना में सामाजिक भावना मिली हुई है। एक कवि की निजी अनुभूति भी अर्थात सुख–दुख का चित्रण भी समाज का ही चित्रण होता है। बच्चन जी ने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर ही जीवन और संसार को समझा और परखा है। वह कहते हैं–

मैं जग जीवन का भार लिए फिरता हूं
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूं
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं सांसो के दो तार लिए फिरता हूं

रहस्यवादी भावना : बच्चन जी के हालावाद में रहस्यवादी भावना का अनूठा संगम है। उन्होंने जीवन को एक प्रकार का मधुकलश और दुनिया को मधुशाला, कल्पना को साकी तथा कविता को एक प्याला माना है। छायावादी कवियों की भांति उनके काव्य में भी रहस्यवाद की अभिव्यक्ति हुई है।

सामाजिक चित्रणः श्री हरिवंश राय बच्चन सामाजिक चेतना से ओतप्रोत कवि हैं। उनके काव्य में समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। इनकी व्यक्तित्व में भी सामाजिक भावना का चित्रण हुआ है।

हरिवंश राय बच्चन की भाषा शैली :

हरिवंश राय बच्चन अस्थाई छायावादी है, उन्होंने अपने काव्य में प्रमुख रूप से सहज, सरल, श्रृंगारपरक भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने अपनी सहज सरल भाषा के माध्यम से जीवन में होने वाले विभिन्न पीड़ादायक कष्टों को अभिव्यक्ति के दृष्टि पटल पर उतारने की कोशिश की है। उनकी भाषा प्रमुख रूप से खड़ी बोली है, जो तत्सम तथा तद्भव शब्दों के साथ उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के साथ देखने को मिलती है। हरिवंश राय बच्चन की रचनाओं में प्रमुख रूप से मुक्तक शैली का स्थान है, जिसमें सरलता,स्वाभाविकता, संगीतमक्ता, प्रवहमयता जैसे गुण देखने को मिलते हैं।हरिवंश राय बच्चन प्रखर बुद्धि के कवि थे। उनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली का अधिकता से प्रयोग हुआ है। इसके साथ–साथ तद्भव शब्दावली, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कवि ने प्रांजल शैली का प्रयोग किया है। जिसके कारण इनका साहित्य लोकप्रिय हुआ है । गीति शैली का भी इन्होंने प्रयोग किया है।

अलंकारः बच्चन के साहित्य में प्रेम, सौंदर्य और मस्ती का अद्भुत संगम है। इन्होंने अपने काव्य में शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों का सफल प्रयोग किया है। अलंकारों के प्रयोग से इनके साहित्य में और ज्यादा निखार और सौंदर्य उत्पन्न हो गया है। इनके साहित्य में अनुप्रास, यमक, श्लेष, पद मैत्री, स्वर मैत्री, पुनरुक्ति प्रकाश, उपमा, रूपक, मानवीकरणआदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया हुआ है। जैसे–

हो जाय न पथ में रात कहीं,

मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी धीरे धीरे चलता है
दिन जल्दी जल्दी ढलता है

बिंब योजनाः कवि की बीमा योजना अत्यंत सुंदर है। इन्होंने भाव अनुरूप बिंब योजना की है। इंद्रिय बोधक बिंबों के साथ–साथ सामाजिक, राजनीतिक आदि बिंबों का सफल प्रयोग हुआ है।

रसः बच्चन जी प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। अतः उनके साहित्य में श्रृंगार रस के दर्शन होते हैं। श्रृंगार रस के संयोग पक्ष की अपेक्षा उनका मन वियोग पक्ष में अधिक रमा है। उन्होंने वियोग श्रृंगार का सुंदर चित्रण किया है। इसके साथ रचनात्मकता को प्रकट करने के लिए शांत रस की भी अभिव्यंजना की है।

हरिवंश राय बच्चन अपने काव्य संग्रह मधुशाला के परिशिष्ट में उन लोगों की जिज्ञासा का जवाब देते है जो ये मानते हैं कि वो भी मदिराप्रेमी हैं। ये पंक्तियाँ एक कवि के रूप में उनके तेवर को बखूबी दर्शाती है। बच्चन जी ने जिस दौर में कविता लिखना शुरू किया था, वो छायावादी कविता का युग था। इस दौर की कविताएँ अतिशय सुकुमार्य और माधुर्य से परिपूर्ण थी। इन कविताओं की अतीन्द्रिय और अति वैयक्तिक सूक्ष्मता से और इसकी लक्षणात्मक अभिव्यंजनात्मक शैली से हरिवंश राय बच्चन उकता गए थे।

बच्चन जी को उर्दू की गजलें लुभाती थी। दरअसल इन गजलों में चमक और लचक थी जो सीधे पाठक के हृदय को स्पर्श करती थी। इस समय देश में स्वतंत्रता आंदोलन भी जोरों पर था। अंग्रेजो के अत्याचारी शासन से देश में अवसाद और खिन्नता पसरी हुई थी। इसी दौर में बच्चन साहब ने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता से परे संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से काव्यात्मक प्रस्तुति दी। उनकी कविताओं में जहाँ एक तरफ गेयता है तो दूसरी तरफ इसकी भाषा एकदम सहज और जीवंत है जो पाठकों को बरबस अपना बना लेती है। उनके इस प्रयोग को हिंदी काव्यप्रेमियों ने भी खूब सराहा। देखते ही देखते हरिवंश राय बच्चन लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गए।अगर हरिवंश राय बच्चन की काव्य यात्रा पर प्रकाश डालें तो उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति है– मधुशाला। वर्ष 1935 में प्रकाशित मधुशाला ने बच्चन जी की लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिए। उन्होंने एक ऐसे विषय पर कविता लिखने का साहस किया जिस पर आम आदमी बातें करने से भी कतराता है। सियासी गहमागहमी के इस दौर में मधुशाला की ये काव्य पंक्तियाँ बेहद मानीखेज है–

''मुसलमान औ' हिन्दू हैं दो, एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक, मगर, उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक मस्जिद मन्दिर में जाते,
बैर बढ़ाते मस्जिद मन्दिर मेल कराती मधुशाला!''

मधुशाला के सहज शिल्प की प्रेरणा उन्हें उमर खय्याम की रूबाइयों से मिली। हरिवंश राय बच्चन के पुत्र और हिंदी सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन की मधुशाला के संदर्भ में दी गई ये टिप्पणी भी इस रचना की प्रासंगिकता को बताती है–
''मेरा मानना है कि पूरी 'मधुशाला' सिर्फ मदिरा के बारे में नहीं, अपितु जीवन के बारे में भी महीन व्याख्या करती है।''
हरिवंश राय बच्चन के 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' नाम से तीन काव्य संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित हुए। हिन्दी साहित्य में इसे कहा गया है। हालांकि इस काव्य पद्धति के एकमात्र कवि हरिवंश राय बच्चन ही है क्योंकि उनकी भाँति सार्वजनीनता, आत्मक्रेन्दीयता को काव्य में लाना बेहद जटिल कार्य है।

हरिवंश राय बच्चन के निजी जीवन में घटी घटनाओं ने ही समआनंदभाव को उनके व्यक्तित्व का प्रमुख आयाम बनाया है। वर्ष 1926 में उनका विवाह श्यामा देवी के साथ हो जाता है। वैवाहिक जीवन की गाड़ी आगे बढ़ती, इससे पूर्व ही उनकी पत्नी को क्षय रोग हो जाता है। अंततः वर्ष 1936 में लंबी बीमारी के कारण श्यामा देवी का निधन हो जाता है।
यह घटना बच्चन जी को अंदर तक हिला कर रख देती है। अपने भोगे हुए यथार्थ को वो काव्यात्मक प्रस्तुति देते हैं और वर्ष 1939 में 'एकांत संगीत' नाम से उनका काव्य संग्रह प्रकाशित होता है। हरिवंश राय बच्चन के भीतर की पीड़ा को उनकी इन पंक्तियों के माध्यम से समझा भी जा सकता है–

''संघर्ष में टूटा हुआ,
दुर्भाग्य से लूटा हुआ,
परिवार से छूटा हुआ, कितना अकेला आज मैं!
कितना अकेला आज मैं !
भटका हुआ संसार में,
अकुशल जगत व्यवहार में,
असफल सभी व्यापार में, कितना अकेला आज मैं!
कितना अकेला आज मैं !
खोया सभी विश्वास है,
भूला सभी उल्लास है,
कुछ खोजती हर साँस है, कितना अकेला आज मैं!
कितना अकेला आज मैं !''

इस काव्य संग्रह के प्रकाशित होने के दो वर्ष बाद यानी साल 1941 में हरिवंश राय बच्चन, तेजी सूरी से विवाह करते हैं। तेजी सूरी की रंगमंच और गायन में बेहद रूचि थी। हरिवंश राय बच्चन को अपने जीवन के संघर्ष का एक ओर साथी मिल जाता है। जिंदगी के रपटीले रास्ते अब सहज प्रतीत होने लगते हैं। इसी दौर में वे 'नीड़ का निर्माण फिर–फिर' की रचना करते हैं–

''नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर–फिर!
नीड़ का निर्माण फिर–फिर,
नेह का आह्वान फिर–फिर!''

हरिवंश राय बच्चन को 'दो चट्टानें' काव्य संग्रह के लिए वर्ष 1968 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। बच्चन जी ने इस काव्य संग्रह में मानव मन की सोई हुई चेतना को जाग्रत करने का प्रयास किया है। इस काव्य संग्रह की पंक्तियाँ युवाओं को सन्मार्ग दिखाती है–

''क्यों कि जीना और मरना
एकता ही जानती है,
वह बिभाजन संतुलन का
भेद भी पहचानती है।''

बच्चन जी को उनकी आत्मकथा 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं' हेतु के.के बिड़ला फाउंडेशन के द्वारा दिये जाने वाले सरस्वती सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया है। इस काव्य संग्रह की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत है–

''अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को किन–किन से आबाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से, अपने दिन बर्बाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
दोनो करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे अपने को आबाद करूं मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!''

हरिवंश राय बच्चन की कविताओं की लोकप्रियता का प्रमुख कारण इनकी गेयता है। इसके साथ ही बच्चन जी ने सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य की भाषा बनाया। उन्होंने कवि सम्मेलन की परंपरा को लोकप्रिय बनाया। श्रोताओं के साथ उनके सहज जुड़ाव ने भी एक कवि के रूप में उनकी पहचान को और प्रासंगिक बनाया।

2003 में 18 जनवरी को हरिवंश राय बच्चन ने अंतिम सांस ली। उनके निधन के कुछ वर्षों बाद अमिताभ बच्चन ने अपने पिता की कुछ मनपसंद कविताओं का चुनाव किया और इन्हीं कविताओं को भारतीय ज्ञानपीठ ने 'कविताएँ बच्चन की चयन अमिताभ बच्चन का' नाम से प्रकाशित किया है।

अध्ययन पद्धति :

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

निश्कर्श:

बच्चन का युग सन्देह का युग था। उनका पारिवारिक परिवेश गतानुगतिक और अंधविश्वासी था। उनके परिजन सामाजिक और राजनीतिक क्रियाकलापों को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। राजनीतिक दृष्टि से यह एक नयी सक्रियता का काल था और सामाजिक दृष्टि से यह सुधारवादी युग था। बच्चन के व्यक्तित्व के निर्माण में इन तीनो ं सूत्रों का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। सामाजिक क्रान्ति के उत्तोलन से उन्हें सड़ी–गली नैतिकता को ठुकराने की पेरणा मिली थी और परिवार के अंधविश्वासी दृष्टिकोण से सोचने के लिए बाध्य किया था। इससे स्पष्ट होता है आड़म्बरों और पाखण्ड़ों का शुरू से ही विरोध किये तथा समाज से इन्हें मिटाने हेतु प्रेरणा प्रदान किये।दरअसल बच्चन जी का काव्य स्वतः स्फूर्त और नितांत वैयक्तिक है। उन्होंने जीवन की सारी नीरसताओं को स्वीकार करते हुए भी उससे मुँह न मोड़ा है बल्कि अपनी काव्य साधना के माध्यम से ये प्रयास किया है कि वे इसी नीरसता में सरसता की खोज कर लें। उनका मानना था कि एक मनुष्य के नीरस जीवन मे भी कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो उसे आनंद का अनुभव कराते हैं। अपने काव्य में वे इन्हीं तत्त्वों को खोजते भी हैं।हरिवंश राय बच्चन हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि गीतकार है, जिन्होंने मधुकलश जैसी अद्भुत रचनाएँ हिंदी साहित्य को प्रदान की है।हरिवंश राय बच्चन ने श्रृंगार रस के दोनों पक्षो को ध्यान में रखकर रचनाएँ प्रदान की तथा विभिन्न गीत प्रदान किए, ऐसे महान कलाकार को हमेशा हिंदी साहित्य में आदरणीय स्थान प्रदान किया जाता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. भटनागर, बाँकेबिहारी(1964) बच्चन व्यक्ति एव ं कवि नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
2. श्रीवास्तव ओंकरनाथ (1968) बच्चन : निकट से : राजपाल एण्ड. संस, दिल्ली ।
3. विद्यालंकार , चन्द्रगुप्त(1970) आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि हरिवंशराय बच्चन : राजपाल एण्ड़ संस, दिल्ली ।
4. पारीक, हरस्वरूप(1974) बच्चन का परवर्ती काव्य :, मंगल प्रकाशन, जयपुर।
5. शर्मा, , डॉ. प्रवीण (1999) बच्चन और उनका काव्य : अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली ।
6. भारती, पुष्पा(2007)हरिवंशराय बच्चन की साहित्य साधना : वाणि प्रकाशन नई दिल्ली ।
7. वर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव (1979) प्रगीतकार बच्चन और अंचल : रचना प्रकाशन इलाहाबाद।
8. दीवान, डॉ. इन्दूबाला(1984) बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति : सूर्य प्रकाशन, दिल्ली।